मेघदूत (मैथिली)

रूपान्तरकार : आरसी प्रसाद सिंह



प्रकाशक

मैथिली प्रकाशन समिति, कलकत्ता

प्रकाशक :
सुरेन्द्रनाथ मिश्र, सचिव
मैथिली प्रकाशन समिति
२०, कैलाश कविराज लेन,
कलकत्ता-६,



प्रथम संस्करण : १९७६
मूल्य : २) दू टाका



मुद्रक :
जयनारायण झा
झा प्रिन्टर्स
२-सी, इमाम बक्स लेन,
कलकत्ता-६

प्रकाशकीय

मैथिली प्रकाशन समिति, ई नवम पुष्प 'मेघदूत' मैथिली रूपान्तर कराए मैथिली क खोइँछ भरैक यथाशक्ति प्रयास कए रहल अछि। ई जन्म काल सँ भाषा ओ साहित्यक अभिवर्द्धन क हेतु प्रकास स्तम्भ बनल अछि। मिथिला मैथिली सेवा मे रत अन्य संस्था सभ कए ई मार्ग देखवैत, अस्तित्वक रक्षाक हेतु सृजनात्मक क्रिया कलाप मे विश्वास रखैत अछि।

मैथिली प्रकाशन समिति, कार्येटा मे विश्वास राखैत उदार भावे सभ संस्था कए सहयोग दैत, एकटा स्वतंत्र पंजीकृत संस्था थीक। एकर मुख्य पत्र 'मैथिली प्रकाश' आब मासिक रूपे प्रकाशित भए रहल अछि। समिति कोनो व्यवसायिक संस्था नहि अपने लोकनिक, साहित्यकार लोकनिक साहित्यिक संस्था थिक। तैं एकरा प्रकाशन मे अपने लोकनिक दिलचस्पी भेनाई स्वाभिविके अछि।

प्रकाशक कए चाहिएन्हि, साहित्यकार, मुद्रक, वितरक एवं पाठक वा ग्राहक। संयोग सँ मैथिली प्रकाशन समिति कए साहित्यकार क आर मुद्रकक सहयोग किछु अंश मे भेटिओ रहल छन्हि, परन्तु वितरक एवं ग्राहक क आंशिको सहयोग जँ भेटि जाइन्ह त अहि वेरूका जेकाँ प्रत्येक वर्ष २ टा कए पुस्तक एवं मासिक पत्रिका मैथिली प्रकाशन समिति प्रकाश करा सकत।

मैथिली ओ हिन्दी साहित्यिक मानल साहित्यकार श्री आरसी प्रसाद सिंहक 'मेघदूत' मैथिली रूपान्तर अन्य अहि तरहक प्रकाशनसँ भिन्न अछि। श्री आरसी प्रसाद जी क कविता मे तरलता, सरलता भावुकता एवं वास्सविकता क समावेश वेशी भेटत।

ई मैथिली साहित्य क एक मूक तपस्वी, साधनकर्त्ता एवं त्यागी साहित्यकार छथि। हिनक विशेषता हुनक कृत मे भेटत।

अन्त मे हम विश्वास दिआ रहल छी जे पाठक वितरक क सहयोग जँ भेटैत रहत त अनेक साहित्यिक मनिषि सभक कृत जे एखन तक प्रकाशित नहि अछि प्रकाश कराएबा मे समर्थ भए सकब।

सुरेन्द्र नाथ मिश्र
मंत्री
मैथिली प्रकाशन समिति, कलकत्ता

१५ अगस्त १९७६

आमुख

कालिदास-कृत मधुर काव्य ई मेघदूत चिर-सुन्दर
रंजन-रसिक, विबुध-दृग अंजन, प्रतिमा-पूर्ण-कलाधर।

भाषा - प्रेमी - लोकनि - निमित्ते,
विश्व - भक्ति विरही मानव-जन-
समवेदित शोकाकुल चित्ते,
सुकवि आरसी कैल मैथिली कविता मे रूपान्तर।

ई कहबाक जोग नहि टीका।
अनुवादो बतलायब फीका।
यथाशक्ति जे भेल सु - सम्भव,
कवि - गुरुकेर सकल गुण-वैभव,
पद - लालित्य, अर्थ - ध्वनि-उपमा,
शब्द - सुमन, सारस्वत - सुषमा।
अलंकार, रस, रचना - कौशल,
भाव - भंगिमा राखैत अविकल,
अप्पन दिस सँ नहि किछु जोड़ल,
केवल सामासिकता तोड़ल।
कालिदास कें स्वयं मातृ-मन्दिर मे आनल सादर।

मौलिकता संग मौलिकता अछि।
या कि रसिकता मे सिकता अछि ?
हमर विफलता पर आरोपित
महाकविक साहित्यिकता अछि।

हुनक प्रसून, हमर कंटक - कुश ;
प्रतिभा की मानय छै अंकुश ?
करथु विचार गुणी गुण-पण्डित।
पक्षपात सँ रहित सु - पण्डित।
कहाँ सिद्ध सारस्वत वाणी ? कहाँ अबोध घुणाक्षर ?
कहाँ विश्व-कवि-कीर्ति-पयोनिधि ? कहाँ सदोष सरोवर ?

कल्पवृक्ष - फल, कामधेनु - पय,
कनक - पात्र मे राखल मणिमय।
कालिदास - काव्यक रस-भोजन।
बड़े भाग्य सँ पावय सज्जन।
ताहि अमृत - आस्वादन मे जऽ
मिलय कदाचित कोनो कंकड़,
तऽ ई अछि अपराध किंकरक, क्षमा करथि विद्वतवर।

———



मैथिली रूपान्तर

❀ पूर्व मेघ

—आरसी प्रसाद सिंह

(१)

पाबि यक्ष केओ प्रभुक शाप सऽ वर्ष भरिक निर्वासन,
अकर्मण्य, अधिकार - भ्रष्ट भऽ प्रिया - विरह मे उन्मन ;
आयल रामगिरिक आश्रम पर,
जतय सघन-शीतल छल तरूवर
जनक-सुता क स्नान संऽजल छल जाहि स्थलक अति पावन।

(२)

जखन बिताओल ओहि शैल पर ओ कामी किछु मास,
खसि पड़लैक हाथ सँ कंचन-कंकण बिना प्रयास ।
तोड़ि रहल हो जेना दुरन्त,
कठिन शिला तिर्यग गजदन्त ,
नव आषाढ़क प्रथम दिवस मे देखल मेघोल्लास ।

(३)

ओहि कुतूहल - जनक घनक आगाँ मे धनदक दास
चिन्ता कैल ठाढ़ भऽअभ्यंतर मे शोकोच्छ्वास ।
सुखी जनहु भऽ जाइछ उन्मन
जखन करय अछि मेघक दर्शन ;
तखन कथे की हुनक, करथि जे दूर देश मे वास ?
आओर कामना करथि प्रिया-कण्ठक आलिंगन - पाश।

(४)

लऽ जायत घन कुशल - वार्ता (निकट देखि कऽ श्रावण)।
एहि प्रकारे होयत प्रेयसीक प्राणक ओ आलम्बन ।
ई विचारि देलक नीरव
अर्घ्य कुटज-कुसुमक अभिनव।
स्वागत करैत मेघ सऽ बाजल प्रीति - वचन प्रिय तत्क्षण।

(५)

कतय मेघ जल - धूम ज्योति आ पवनक जड़ - संघात ?
कतय चतुर - जन द्वारा प्रेषित प्रिय संदेशक बात ?

एकर यक्ष किछु ध्यान ने देल ।
उत्कण्ठित भऽयाचक भेल ।
जड़ - चेतनक भेद रहैत छै कामी कें नहि ज्ञात ।

(६)

हम जनैत छी इन्द्रक तों, छुऽ प्रमुख सखा विख्यात ।
बहुरूपी, जग - विदित पुष्कलावर्तक - कुल - संजात ।
यद्यपि विफल होय, से ठीक ;
गुणी व्यक्ति सं मांगव नीक ।
सफल मनोरथ मे नहु याचना
किन्तु, अधम सं अनुचित थीक ।
प्रार्थी छी हम अतः तोरा संऽ विरही दैव - वशात् ।

(७)

कामातुरक शरण छऽ तोहो, तेंलऽ जाह संदेश ।
हे पयोद, धनपतिक क्रोध संऽ पाओल विरह-कलेश ।
अलका नामक पुरी कुबेरक,
जकर भवन -समूह नभचुम्बी
कैलासालय - स्थित महेश्वरक
भाल-चन्द्रिका संऽ रहैत छै निर्मल बनल विशेष ।

(८)

जाएत तोरा देखतीह गगन मे पथिक - बधू सोच्छ्वास ।
केश हटा आनन संऽ आ कऽ प्रियागमक विश्वास ।
हमरा सन सौभाग्य विहीन,
के अछि एहन परक आधीन ?
एना उपेक्षित करत प्रिया कें जे हा ! विरह-हताश ?

(९)

दऽ रहलछि अनुकूल प्रेरणा लहु- लहु मंद समीर ।
वाम भाग सँ चातक करइछ मधुर शब्द गम्भीर ।
गर्भाधानक सुख सँऽ तत्पर,
पाँति बान्हि कऽ नभ मे सुन्दर;
संगहि संग वलाका लऽ कऽ चलवह तोरा अधीर ।

(१०)

करबह कहुना निश्चय जीवित पतिव्रता भाउजक दर्शन ।
सांस लैत जे बरू प्रिय-मिलनक दिन गनैत होयती प्रतिक्षण

प्रणय.- युक्त नारीक हृदय
विरहक जखन अबैछ समय ;
आशे सँ बान्हल रहि जाइछ जे मृदु मोन सुमनमोहन ।

(११)

परतीपन धरतीक तोड़ि कऽ अंकुरा छत्रक बाल
गर्जन जे होइत अछि तोहर, सँ सुनि श्रवण-रसाल,
मान-सरोवर - गमन- विधेय
सरसिज - नालक लऽ पाथेय,
संग तोहर कैलास- शिखर धरि देतह राज-मराल ।

(१२)

लोक- वन्द्य रघुपति-चरणांकित जेकर तराइक वास,
विदा लिहऽ प्रिय सखा तुंग गिरि कें दऽ तों भुजपाश ।
तोरा सँ प्रतिवर्ष मिलन मे
दीर्घ विरह सँ ब्याकुल क्षण मे
स्नेहक जे अभिव्यक्ति करय अछि तेजि उष्ण उच्छ्वास ।

(१३)

सुनबह तों पश्चात् कान सऽ पीबा जोग सनेश;
तावत पथ अनुरूप प्रयाणक सुनह कयल निर्देश ।
दूबर भऽ वर्षाक दान कऽ
हल्लुक जल सरिताक पान कऽ
जयबह पयर रोपि तों गिरि पर भरल-भरल श्रम-क्लेश ।

(१४)

"की कोनो गिरि- शृंग उड़ा लऽ जाइत अछि पवमान ?"
मुग्ध सिद्ध नारी उन्मुख भऽ करइत ई अनुमान .
देखत चकित तोहर उत्साह,
सरस बेतमय एहि स्थान सँ
उत्तर - मुँहे सुरंग क राह ;
उड़ि जा तों प्रहार सँ दिग्गज - सूंढक बचैत महान् ।

(१५)

आगां मे निकसैत भीड़ सं इन्द्रधनुष अभिराम ।
विविध रत्न मणिकर जेना हो शोभा - ग्राम ।
तोहर सहज साँमला रंग
भऽ जयतऽ अति सुंदर अंग;

चमचमायत जनु मोरपंख संशोभित श्री घनश्याम।

(१६)

भू- विलाश संऽ नहि परिचित जे, कृषक - बधू ग्रामीण,
देखत तोरा बूझि 'कृषिक फल सकल तोहर आधीन'।
सहजे प्रीति -सरस चितवनि सँ
तों जा कऽ सद्यः हर जोतल
सोन्ह सुरभि-मय माल अवनि संऽ,
किछु पच्छिम, पुबि उत्तर जइहऽ द्रुत गति भऽ जल-क्षीण

(१७)

आगाँ बढवऽ वनक उपद्रव वर्षा संऽ कऽ शान्त।
आम-कूट गिरि लेतह शिर पर देखि तोरा श्रम-क्लान्त।
मित्रक कृत उपकार विचारि
आयल आश्रय लेल दुआरि,
नीचो व्यक्ति ने मुँह मोड़य, की कोनो तखन महान्त ?

(१८)

चिक्कन जूड़ा- रंग वला तों चढबऽ जखन शिखर पर
घिरल जंगली आमक वन सऽ आस-पास मे गिरिवर।
पाकल फल चमकैत अरोग,
धरणी-कुच-छवि पाओत निश्चय
देव - दम्पती - दर्शन - जोग ;
बीचो-बीच श्याम रंग, चारू कात शेष मे पिअर।

(१९)

जेकर कुंज मे वनचारी - जन-रमणी कयल विहार,
ताहि ठाम पल विलमि, फेर आगूक मार्ग कऽ पार,
वारि बरसि गेलाक कारणे
विध्याचलक तराई मे तों
हल्लुक भऽ अति शीघ्र चारणे
ऊँच - नीच पाथर पर बिथुरल देखब रेखा - धार।
जनु हाथीक देह पर अंकित भस्म सुरेखाकार।

(२०)

बरसा कऽ जलधार मेघ तों रिक्त जखन भऽ जाह,
लेखन जामुन तरू-निकुंज सं अरूझल जेकर प्रवाह,
सुरभित वण्य गजक कटु मद सँ,
चलिहऽ से जल लऽ कऽनद सं,

आत्म- वली तोरा चल-विचलित कऽने सकत गंधवाह ।
रिक्त वस्तु सभ क्षुद्र होइत छै, पूर्ण सदा गरूवाह ।

(२१)

देखि कदम्बक विटप, खिलल जेकरा मे आधा केसर,
जाहि कारणे रंग ओकर किछु हरियर आ किछु धूसर ।
पुनः देखि कऽ नदी - कात मे
सरस कन्दली, कलिका पहिले
पहल सुशोभित जेकर गात मे ;
गन्ध सूंधि कऽ दग्ध अरण्यक धरती केर मनोहर ।
सूचित करतः चातक पथ जल-सीकर वर्षा तोहर ।

(२२)

वारि-विन्दु मुंह सं लोकऽ मे चातक चतुर लखैत,
पंक्ति-बद्ध बगुला कें आंगुर सँ गनैत- देखबैत,
धन्यवाद करतह सादर,
सिद्ध लोकनि सहसा तोहर;
गर्जन-कम्पित भीत प्रिया केर आलिंगन - सुख लैत ।

(२३)

हमरा सुख लै शीघ्र पहुंचवाक इच्छुक तों छऽ मीत ।
मुदा कुटज -सुरभित प्रति गिरि पर होयतह समय व्यतीत
तकरे होइछ सोच -विचार ।
जयबाक लेल यत्न तों करिहऽ
जल्दी सं जे कोनो प्रकार ।
सजल - नयन अरियायत देतह मोरक स्वागत - गीत ।

(२४)

निकट आबि गेला सं तोरा भऽजायत रंग पीअर ।
उद्यानक घेरा मे लागल कुसुम - केतकी तरूवर ;
अग्रभाग जेकर बिहुंसल छै ।
कागक नीउ बनयबा क्रम मे
गामक गहवर - तरू भैरियैतै ।
पाकल फल सं कारी लगतय जामुन केर वनान्तर ।
आ दशार्ण जनपद मे रहतय हंस गोटेके वासर ।

(२५)

दिशा -ख्यात विदिशा नामक जे नगरी राज - प्रधान,
जा कऽ तों सद्यः फलपयबऽ कामुकताक महान् ।

कारण जे तों तरल - तरंगित,
पीबऽ मधुर वेतवा - नीर ।
तीर-समीप तोहर गर्जन सं
बनल जेकर सौभाग्य आधीर ।
कोनो नायिका केर चढल भौं विलसित वदन-समान ।

(२६)

फुलल कदम्बे तोहर स्पर्श सं पुलकित सन, 'नत नाम'
विन्ध्य शैल पर ततऽ वास कऽ करिह तो विश्राम ।
जेकर शिला -गृह सं निर्बन्ध
निर्गत वार - बधू रति - गन्ध
प्रकट रहल कऽ नागर - लोकनिक नव यौवन उद्धाम ।

(२७)

कऽ विश्राम चलऽनव जलकण सं पटवैत सुजात,
जूही - कुसुम-कली उद्यानक नहरिक काते कात ।
कानक कमल जेकर मौलल,
करतल बारम्बार बढ़ा कऽ
पोछब सं गालक श्रमजल ।
फूल चुनऽवाली युवती-दल -
मुख-मण्डल पर छाया शीतल दऽ कऽ परिचय -पात ।

(२८)

उत्तर दिश जायत पथ तोहर यद्यपि होतऽ घुमान,
उज्जयिनीक अटारी सं तों रहिह ने अनजान ।
तों न यदि रमल लोचन सं,
नगर-कामिनी केर चमत्कृत
चंचल बिजुलेखा - नर्तन सं ।
एक लाभ सं बंचित होयबह जीवन केर प्रधान ।

(२९)

जेकर करधनी लहरिक हलचल सं कूजित खग- गोल,
भंवर नाभि देखबैत, चालि सं लड़खड़ायत समतोल ।
निर्विन्ध्या नामक जे एहन
नदी-रूपिणी वनिता संग
भरि लीहऽ रस सं अरंग
बाह्य- विलास नारीक प्रिय पति प्रथम प्रणय केर बोल ।

विरह -दशा सं करतऽ जे सौभाग्य तोहर विस्तार,
(रमणी कर गुहल) चोटो सन क्षीण जेकर जलधार,
तट पर उगल गाछ सँ टूटल,
सूखल पात-जकाँ जे पीअर
कृशता अपन दिए तजि सत्वर,
एहन उपाय कोनो करिहऽ तों सुभग, नदी कऽ पार।

(३१)

जतऽ बसय प्रति ग्राम बृद्ध जन उदयन-कथा-सुजान,
पहुंच अवती जनपद जाइहऽ पूर्व कथन कऽ मान।
पुरी विशाला नाम प्रवर,
शोभा विभव विशालि जेकर;
भूतल-निगत देवता द्वारा सुकृति भोग-फल-म्लान।
शेष पुण्य सँ अपहृत द्युतिमय स्वर्गक खण्ड-समान।

(३२)

विपुल मधुर-मद सारस-ध्वनि के दैत आओर विस्तार,
फुल्ल कमल-परिमलक. संग सं सुरभित समय सकार,
सुरत - खेद नारीक हरैछ,
सुख अंगक अनुकूल करैछ।
प्रणय- निवेदन चटुल कान्त सम शिप्रा-पवन उदार।

(३३)

सजल-सजाओल खण्ड प्रवालक, सीपी शंख अपार
कोटि कोटि बहुमूल्य रत्नमय उज्ज्वल मुक्ताहार।
जेकर पुण्य मे देखि ललाम
अंकुरदैत प्रकाशक मरकत-मणि
नवोन दूर्वादल - श्याम।
जले मात्र अवशेष हो जनु लक्षित पारावार।

(३४)

"वत्सराज प्रद्योतक दुहिता हरण कयल 'एहिठाम।
एतय वाहि रामाक ताड़वन छलै कनक-अभिराम।
मद सँ खम्भ उखाड़ि अशान्त
अहो ठाम भऽ गेल छलै नल
गिरि नामक हाथी उद्भ्रान्त।"
जतऽ एना कहि कथा करै छै विज्ञ लोग सामोद।
उज्जयिनी मे नव आगन्तुक - प्रियजन मनोविनोद।

(३५)

तोरे सन दरकल कपोल सँ नव यौवन - मद-धार।
बरसाबैत समुन्नत शिर गजराज भूधराकार
जतऽ पात सम श्यामल अंग
सूर्यक अश्व समान तुरंग,
योद्धा युग - समर्थ जतऽ दशमुख - सम्मुख भऽ ठार
असित प्रहार - चिन्ह सँ लाँछित भूषण-शोभा सार।

(३६)

जाहि रूप सँ करय कामिनी छै केशक शृंगार
तेकर धुआँ खिड़की सं चलिकऽ बढ़ा देतौ आकार।
बन्धु - स्नेह सँ भरल उदार
भवन केर पोसल मयूर सं
पैबऽ तों नाचक उपहार।
सुमन सुगन्धित्त, अंकित सुन्नरि पयरक राग विशेष
राजमहल शोभा अवलोकैत मेटि दिहऽ मन क्लेश।

(३७)

तोरा देखतऽ महादेव - गण सादर येह विचारि;
स्वामी कण्ठक नील रंग सँ छवि तोहर निरधारि
जइहऽ तों पवित्र अभिराम
त्रिभुवन - गुरु चण्डीश्वर धाम,
जेकर बाग मे बहय पवन रज-कमल गंध संपृक्त,
गन्धवती जल मे खेलायत युवतीक स्नान सं तिक्त।

(३८)

महाकाल मन्दिर मे यदि हे मेघ, जाह तों आन
कोनो काल मे, तऽ रुकि जइह ताबत धरि दिनमान
भऽने जाइछ आँखिक ओझर,
पूर्ण प्रसाद प्राप्त तों करब
शिबक सान्ध्य - पूजा अवसर पर
स्वयं प्रशंस्य गम्भीर तोहर बजि उठतऽ डंक समान

(३९)

गणिका तोरा देखतऽ कटाक्ष सँ भ्रमर-पाँति सन स्फार
पयरक आंगुर- सुखद .पाबि वर्षाक पहिल आसार,
पद - गति सँ करघनी बजैत
थाकल कर लहु-लहु डोलबैत
आ तऽ चंवर जे रत्न कान्तिमय शोभित .दण्डाधार।

(४०)

बाद, नृत्य - आरम्भ - काल मे तों सायंकालीन;
जवा - कुसुम सम तेजवलय धारण कऽ रक्त - नवीन,
गोलाकार बना कऽ घेरा
शिवक उच्च भुज-तुर कानन मे भऽ जइहऽ अभिलीन।
पूर्ण दिअऽहुन कऽ ले धुआयल गज-चामक आसक्ति।
तोरा प्रति हे बन्धुपयोधर,
भय - उद्वेग शान्त भेला सँ
पार्वतीक अनिमेष नयन मे देखल जयतै भक्ति।

(४१)

अभिसारिका-प्रिया कें जाइत प्रियतम रमण निवास।
सूचि-भेद्य घन अन्धकार सँ पूर्ण विलुप्त प्रकाश॥
ततऽ राति मे राज मार्ग पर।
कनक कसौटी रेखा सन
बिजुरीक चमक सं अति सुन्दर;
भूमि देखा तों दिहऽ, मुदा ओ मोरू हृदय छै बाल।
जल वर्षण आओर गर्जन सँ जुनि होइहऽ वाचाल।

(४२)

चिर विलास सं तोहर प्रिया बिजुरी भऽ जयती क्षीण।
राति गमबिहऽ आ कोनो छत पर भवनक आसीन।
सूति गेल हो जतऽ कबूतर,
फेरो उदय भेला पर दिनकर,
हे जलधर अवशेष मार्ग कें कऽ लीहऽ तों पार।
मन्द होथि ने, ओ जे कयलनि सुहृद-कार्य स्वीकार।

(४३)

प्रेमी जन सं ऽ तखन खण्डिता - नायिकाक दृग -वारि।
पोछब होइत छै, तें सूर्यक मार्ग दिह तों छाड़ि।
ओहो घूरि कऽ आओत भोरे,
हटबऽ लेल कमलिनी कांता-
कमल-वदन संऽ ओसक नोरे।
भऽ जयतऽ अत्यन्त रुष्ट जऽ रवि-कर लेबऽ निबारि।

(४४)

सुप्रसन्न - मन सदृश गंभीरा सरि-जल मे आम्लान।
कऽ जयतऽ प्रवेश छाया तन तोहर सहज छविमान।

तें ने तोरा लेल उचित
चितवनि करब धैर्य विचलित
चंचल माछक उछलब-रुपी विकसित कुमुद- समान।

(४५)

तरिक नीर जल-वसन हटा कऽ जेकरा बेतक डारि
किछु-किछु धयने जकाँ हाथ सँऽ पुलिन नितम्ब उघाड़ि
तों आरूढ निलम्बित भऽ कऽ
गमन कठिनता सँऽ कऽ सकबऽ
सुरत-स्वाद-अनुभवी रसिकवर
के समर्थ अछि त्याग करऽ मे जाँघ उघाड़ल नारि ?

(४६)

इच्छुक होबऽ जखन देवगिरि करऽ लेल प्रस्थान
बहतऽ निच्चें निच्चे तोहर मृदु शीतल पवमान।
पकवै वला वनक फल गुल्लर
पानि बरसि बेला पर निर्गत
माटिक गन्ध संग सँ मनहर,
करय सूंढ सँ मधुर शब्द कऽ हाथी जेकरा पान।

(४७)

बरसा कऽ नभ- गंगाजल सँऽ धोअल पुष्पासार
मानि स्वयं कें पुष्प मेघ तों ततऽ करिबिहनु स्नान।
सदा निवासी कार्तिकेय कें
सूर्यो सँ अति जाहि तेज कें
शशिशेखर भगवान
सुर-सेना रक्षार्थ अग्नि मुख मे कयलनि आधान।

(४८)

तेकर बाद, तों शैल-गुहा मे प्रति गुञ्जित गर्जन सँ
नाच नचविहऽ स्कन्द-मोर कें, शंकर-चन्द्र-किरण सँ
आँखिक कोर जेकर उज्ज्वल,
गोल-गोल चमकैत रेखमय
पाँखि जकर स्वमेव खसल,
पुत्र-स्नेह-वश लगा लैति छथि
गौरी अपन कान मे सोम-वला कमल-अर्पण सँ।

(४९)

अराधन कऽ स्कन्द देव कें आगू जैखन बढबऽ

वीणा-वादी सिद्ध-दम्पती जल वर्षा सं डरिकऽ,
तोहर मार्ग सं हटि जयतऽ
देबऽ लै सम्मान तखन तों
रन्ति देव राजाक कीर्ति-प्रति
झुकि जइहऽ गोमेध यज्ञ सं
भावति नदी - रूप मे भूपर गेलछि जे परिणत भऽ।

(५०)

विष्णुक वर्ण चोर तों नमवऽ जलादान लै जैखन
अचल दृष्टि संऽ करतऽ विलोकन निश्चय नभ-चारी-गण
से सरिता प्रवाह जे दूरे
विस्तृत होइतहु लगैछ पातर
पैघ नीलमणि - जड़ित बीच मे
अवनी केर एक लड्डू-मोती माला जकाँ सुशोभन।

(५१)

नदी पार भऽ जा हे जलधर, तों करैत निज गात,
दशपुर-जनपद बधू - विलोचन कौतूहलक सुपात्र।
भू-लतिका-विभ्रम संऽ परिचित,
पलक-क्षेप सं श्वेत, श्याम,
रतनार कान्ति लाभे जे विलसित,
आ जे करय-बला आकर्षित
हिलैत कुन्द संग डोलैत मधुपक सुन्दरता सहजात।

(५२)

तदुपरान्त, तों जलद पहुंच कऽ ब्रह्मावर्त प्रदेश,
कुरुक्षेत्र जयबऽ छाया सँऽ अपन करैत प्रवेश।
जे क्षत्रिय-कूल-नाशक सूचक;
शत-शत तीक्ष्ण बाण सं धारा-
पात जतऽ गाण्डीव-धनुर्धर,
बरसल राज-पुरुष-मुख पर, तों जेना कमल पर शेष।

(५३)

बन्धु-प्रीति संऽ समर - विमुख भऽ कयलनि जेकरा पान,
हलधर हाला-त्यागि सरस रेवती - अधर मद-मान;
सेवन कऽ से सरस्वती-जल,
तोरो अन्तर होतऽ निर्मल,
सौन्य, कृष्ण तों रहबऽ केवल वर्ण मात्र संऽ आन।

(५४)

जइहऽ कनखल लऽग ओतऽ तों जहनु सुता जे स्थान,
बनली सागर-सुते नगपति सं उतरि स्वर्ग सो पान।
गौरी - वदनक भृकुटि-भंग कें
करैत फेन - रूपे उपहास;
लहरि - करे छुबैत शशि धयली शम्भु-केश-विन्यास।

(५५)

पीबऽ चाहऽ ओकर जल जों स्वच्छ-स्फटिक सन उज्ज्वल
(पछिला धड़ रोपत) गगन मे, अगिला धड़ सं लटकल
ऐरावत - समान तिरछा भऽ
तँऽ अभिराम उचित स्थानो बिनु
लगतै ई यमुना - संगम कऽ
तोहर छाया सं धारा मे सहसा जायत ससरल।

(५६)

शिलासीन कस्तूरी - मृगदल संऽ सुरभित हिमवान
शैल पहुंच कऽ तुहिन धवल तों गंगा उद्गम स्थान,
जखन बैसबऽ ओकर शिखर पर,
तखन प्राप्त करबऽ तों शोभा
शम्भुक शुभ्र बृषभ-द्वारा उत्पाटित पंक - समान।

(५७)

वायुक बेगें देवदारु - शाखा-घर्षण सं जागि
उधियायल उक्का सं चमरी
गायक केश - जाल झड़कावै - वला जंगलक आगि
जं सन्तप्त करय गिरि-प्रान्त,
तऽ तों ओकरा दिह पूर्ण कऽ
शत-शत जलधारा सँऽ शान्त।
छै श्रेष्टक सम्पदा विपन्नक कष्ट निबृति फल लागि।

(५८)

ताहि शैल पर अंग - भंग लै अपनहि शरम सरोष,
उछलि वेग सं शीघ्र चलय जंऽ तोरा लाँघि सघोष;
तँऽ करका क तुमुलक बृष्टि;
नष्ट ओकर कऽ दिह सृष्टि।
विफल - कर्म यत्नी के लहअछि अवमानक ने दोष?



मैथली रूपान्तर

❀ उत्तर मेघ ❀

—आरसी प्रसाद सिंह

(१)

तों बिजलो सऽ ओ विलासिनी वनिता सऽ शोभित,
तोहर स्निग्ध गंभोर घोष ओ गीत-मुरज-मुखरित।
इन्द्रधनुष सऽ तो, सचित्र ओ।
तोहर अन्तर मे पूरित जल,
आ ओकर छै मणिमय भूतल।
तोऽ उत्तुंग स्वयं छऽ, तऽ नभचुम्बो ओकर शिखर।
सब तरहें तुलना समर्थ अलका - प्रसाद तोहर।

(२)

कर मे लीला-कमल, अलक मे गुफित कुन्द कली।
लोधक पुष्प-रेणु सऽ रंजित आनन-श्री धवली।
केश - पाश मे अभिनव कुरवक
सुमन-शिरीष काम मे सुन्दर
आओर करय छै तो हर आगमन सं
खिल जाय-वला हे जलधर!
कुसुम-कदम्ब मांग मे धारण जतऽ बधूक-अवली।

(३)

जतऽ सदा-पुष्पित पादप उन्मत्त भ्रमर सांऽ गुंजित,
हंस-पंक्ति-करधनी कलित नलिनी नित सरसिज-विकसित।
बाजऽ ले उत्कण्ठ—विभोर,
पाँखि जेकर चमकैत सर्वदा
जतऽ भवन मे पोसल मोर।
संध्या रम्य नित्य ज्योत्ना संऽ विस्तृत तिमिर-पराजित।

(४)

लोचन-जल आनन्द-जनित, नहि अन्य कोनो कारण सऽ।
इन्ट-समागम-साध्य काम सऽ ताप, ने दोसर जन सँ।
प्रणय - कलह सऽ विरह क प्राप्ति।
यक्ष लोकनि के जतऽ आन वय नहि कोनो यौवन सऽ।

(५)

जाहि पुरी अलका मे उत्तम स्त्रीक सँग लऽ यक्ष
जा कऽ उज्ज्वल मणि सँ विरचित
बिम्बित तारक - कुसुमावलि सऽ चित्रित हर्म्यक कक्ष,
तोहर सन गंभीर नाद मे
मन्द-मन्द आहत मृदंग पर
पोबि कल्पबृक्षक मद पाबय छथि रति-फल प्रत्यक्ष।

(६)

मन्दाकिनी - सलिल सऽ शीतल सरस समीरण सेवित
तटोत्पन्न मन्दारक छाया सऽ श्रम तपन निवारित,
जत यक्ष-कन्या सुर-प्रार्थित,
अन्वेषण क्रीड़ा कऽ रहली
भरि-भरि मुट्ठी कनक-बालु मे मणि के कऽ अन्तर्हित।

(७)

जतऽ रेशमी वस्तक नोबी—बन्धन खुजि गेला पर,
हटा देला संऽ सानुराग प्रिय—द्वारा कामातुर कर,
बिम्बोष्ठी लज्जा वश मूढ
यक्ष-प्रिया क प्रयत्न होइ छै
मिझौबाक चूर्णक मुट्ठी संऽ
सम्मुख रहितहु विफल ऊँच लौ-वला रत्न-ज्योतिर्धर।

(८)

उत्प्रेरक समीर द्वारा लऽ जायल गेल मनोहर,
सतमंजिला प्रासादक अलका केर उपरका तल पर;
नव सीकर संऽ चित्र विकृत कऽ
शंकित भीत जकां भऽ जर्जर,
खिड़की संऽ बहार होइत छै
सदय: घूमक नकल करऽ मे निपुण तोहर-सन जलधर।

(९)

हटि गेलें अवरोधक तो हर हिमकर क किरण संऽ निर्मल
अदर्धं-रात्रि मे चन्द्र-कान्त-मणि तन्तु-जाल मे लटकल,
स्पष्ट सलिल-कण टपकावैत
प्रिय भुज-बन्धन मे सिसकैत
सुरत-जनित तनु ग्लानि कामिनी केर करय छै निष्फल।

(१०)

अक्षय निधि-पूरित अतःपुर-वला जतऽ कामी-जन
देवांगना-सदृश वेश्या-संग वार्तालाप मगन-मन,
मधुर कण्ठे धनपति-यश-गायक,
किन्नर–सह बैभ्राज -सुनायक;
बाह्य वाटिका मे लय छै अनुभव आनन्द-विबर्द्धन।

(११)

अभिसारिका - कामिनी लोकनि केर नश पथ दुस्तर
गति में वेग कारणे कम्पित,
अलक- पतित मन्दार - पुष्प सऽ
एवं खसल कान सं कंचन
कमलक पंखुड़ी द्वारा भागल,
कुच - मण्डल पर टकरा टूटल,
हारक छिरियायल मोती सऽ
जतऽ जाह छैक जानल - बूझल सूर्योदय भेला पर।

(१२)

धनपति - सखा सदाशिव के साक्षात् करैत निवास
जतऽ जानि मन्मथ नहि धारण प्रायः करय स-त्रास,
भ्रमरक डोरी - वला शरासन
ओकर कार्य कऽदय छै सिद्ध
कामी-जन कें लक्ष्य बनाओल
भ्रू - भंगिल लोचन सँ छोड़ल,
कुशल कामिनी केर व्यर्थ नहि होब-वला विलास।

(१३)

रंग- बिरंग क वसन आओर आभूषण विविध प्रकार,
लोचन भ्रमित करऽ क कला मे परम निपुण मद- सार;

किसलय - साहित कुसुम- अंकुर
कोमल कमल - चरण मे लगबऽ
योग्य राग लाक्षाक प्रचुर ;
एक कल्पतरु दैत जतऽ छै सब अबलालंकार ।

(१४)

ततऽ कुबेरक गृह सं उत्तर इन्द्रधनुष -सन सुन्दर
तोरण - परिलक्षित दूरहि सं होइत छैक हमर घर ।
जेकर समीपे हमर प्रेयसी—
द्वारा मानल पुत्र-जकां,
पोसल -पालल कर सऽ छूबऽ
योग्य, पत्र-गुच्छा सं आनत शिशु-मन्दारक तरूवर ।

(१५)

मरकत-मणि पाथर सऽ बान्हल जेकर मार्ग-सोपान ,
ताहि सदन मे एक जलाशय तेहन कयल निर्माण ;
जे चिक्कन वैदूर्य, मृणाल क
विकसित स्वर्ण-कमल सऽ ढांकल
नीर–निवासी जेकर हंसवर
समीपस्थ नहि मान-सरोवर
चाहै छऽ लखियों कऽ तोरा विरिहित शोक–समान ।

(१६)

ताहि जलाशय–तट पर सुन्दर इन्द्र नोलमणि–निर्मित,
शिखर–वला क्रीड़ा–पर्वत छैक कंचन–कदली–वेष्ठित ,
दर्शनीय हे सुहृद सलिलधर,
हमर प्रिया कें से अति प्रियगर।
तें चमकैत तड़ित सं तोरा
काते-कात देखि कऽ कातर
हम करैत छी स्मरण ओकर चपल चित्त सं चिन्तित ।

(१७)

ओहि शैल-क्रीडा पर कुरबक–
तरुवर–आबृत लता माधवी मण्डय केर उपान्त,
अरुण अशोक चपल पल्लव दल–वकुल-तरु कान्त ।
अभिलाषी छै एक ताहि मे

हमरा दूनू गोटेक सखी केर बायां चरण- प्रहारक।
आ दोसर आकांक्षी दोहद-
व्याजे ओकर मुख सं कुल्ला कयला वारि मद सारक।

(१८)

आओर बीच मे दूनू गाछक स्फटिक फलक छै उज्ज्वल
जेकर दण्ड सोना क, जड़ि में
नव कोमल बांसक छविष उपमित मरकत मणि सऽ बान्हल।
बैसब सायंकाल जाहि पर
नीलकण्ठ छै तोहर सुहृदवर
हमर प्रिया क मधुर कंकण ध्वनि मुक्त ताल पर नाचल।

(१९)

सुजन, कयल हृदयंगम वर्णित एहि पूर्व लक्षण संऽ,
आ द्वारक समीप रेखांकित शंख - चक्र - दर्शन संऽ।
जयबऽ तों निश्चय घर चीन्ह।
सम्प्रति हमरा नहि रहला संऽ
शोभा जेकर भेल छै क्षीण।
कमल करय-धारण नहि ओ अस्ताचल रवि क गमन सं

(२०)

शीघ्र प्रवेशक हेतु बैसि कऽ प्रथम कथित तत्काल,
रम्य शिखर क्रीड़ा-पर्वत पर बनि कऽ लघु गज-बाल;
अन्तः पुर मे करिहऽ विद्युत-
दृष्टिपात तो मन्द-मन्द जनु खद्योतावलि - ज्वाल।

(२१)

ताहि भवन मे एहन हुए जे पातर, कटि, समदशना।
पाकल बिम्ब सनक ओष्ठाधर, चंचल हरिणी नयना।
दूबरि, श्यामा, नाभि गहीर।
गमन नितम्ब-भार संऽ धीर।
कुच संऽ किंचित विनत शरीर।
सब संऽ पहिल सृष्टि कर्त्ता केर युवती विषयक रचना।

(२२)

चकवी-जकां भेलि जे असकरि, दूर जेकर हम सहचर।
शिशिर-मथित कमलिनी-जकां भऽगेल जेकर रूपान्तर।

परिमित वार्तालाप करैत,
विरह - वेदना मे प्रगाढ़ जे
ई भारी दिन छै वितवैत।
जीवन हमर ताहि बाला के बूझि लिहऽ तो दोसर।

(२३)

बारम्बार रुदन कयला संऽ लोचन होयतय सूजल।
गरम-गरम निःश्वासक चलने अधरोष्ठक रंग बदलल।
करक सहारे टिकल, खूजि कऽ
लटकल अलकावलि संऽ ढांकल,
हमर ताहि प्रियतमा केर मुख
तोहर पाछां - पाछां जायत
क्षीण-मलिन चानक प्रकाश-सन निश्चय हयतय निष्फल।

(२४)

अथवा देखऽ मे पहिनहि ओ औतऽ वलि-पूजन में।
विरह-क्षीण अथवा आकल्पित हमर चित्र-लेखन मे।
अथवा पिंजड़ा केर वासिनी
मैना के पूछति सुभाषिणी—
"रसिके, तों स्वामीक प्रिया, की छथि ओ तोहर स्मरण मे ?'

(२५)

अथवा मलिन-वसन गोदी मे सौम्य, राखि ओ वीन,
नयन-सलिल संऽ भीजल तारे
सुर मे साधल कोनो प्रकारे
गाबऽ लै पद ललित सकामे
विरचित मणित हमर उपनामे
अपनहुं संऽ बान्हल धुन बिसरति बार-बार लय - लीन।

(२६)

अथवा विरह - दिवस संऽ स्थापित शेष अवधि केर मास,
गूनति सुमन देहरी राखल भू पर कऽ विन्यास;
अथवा सहवास क आस्वादन,
लैति हृदय मे आकल्पित सन,
प्रिय-वियोग मे यैय अधिकतर कान्ता केर विलास।

(२७)

कार्य व्यस्त रहले नहि दिन मे हमर वियोग सतयतै।
हम शशंकित छो, तोहर सखी के,
मुदा राति मे निर्विनोद भेला सं बड़ दुख हयतै।
ओकरा सुना हमर सन्देश,
जंऽ हो सुख देबाक विशेष।
तंऽ चढ़ि क सौधक वातायन,
सतवंती तों हमर प्रिया कें
पड़लि भूमि पर देखऽ, जेकर नैन नीन नहि अयतै

(२८)

विरह - शयत मे एक करोटे, मनोब्यथा संऽ क्षीण
उदयाचल पर कला-मात्र तनु शेष चान सन दीन;
रातिबिताओल जे मम संगे
क्षण - समान इच्छा - रति - रंगे
खेपति उष्ण अश्रु सँऽ तेकरे बढ़ल विरह संऽ पीन।

(२९)

जल-मार्ग संऽ आयल शीतल चन्द्र-किरण अमृत-सन,
पूर्व स्नेह-वश देखि, विरत भऽ पुनि, भूनति निज लोक्षन,
पल सँ व्यथा - अश्रु - जल - भारी
बादर - भरल दिवस मे कारी
स्थल क कामिनी जकां ने जागलि आ ने सूतलि तत्क्षण।

(३०)

ऋतु - स्नानक उपरान्त रुक्ख विलुलित कपोल-तल कुन्तल
निश्चय हटवति श्वासे झूलसै - वला अधर पल्लव -•दल;
स्वप्नो मे सहवास हमर
कोनो तरहे हो संभव;
ई विचारि चाहति निद्रा, पथ जे कर अश्रु अवरोधल।

(३१)

पहिले विरह - दिवस मे माला छोड़ि, शिखा जे बान्हल,
शाप - शेष मे शोक - निबृत हमरे संऽ जायत खोलल।
बिना कटल नह - बला हाथ सं,
सार–संवारति कल कपोल संऽ,
कठिन, विषम, छूबऽ मे दुखकर सैंह एकवेणी प्रतिपल।

(३२)

बारम्बार दुःख संऽ अतिशय धारति परम अधीर,
बीच सेज में धरल सुकोमल सूषण-हीन शरीर;
ओ अबला अवलोकि अवश्य,
तोरा अश्रु - विमोचन हयतऽ
नव जलमय, ई जानि रहस्य;
होहत छै सब कोमल अन्तर-वला अधिकतर करुणा-शील

(३३)

तोहर सखी क मोन हमरा प्रति स्नेह - पूर्ण, जानय छी।
प्रथम विरह में तै हम ओकरा एहन भेलि, मानय छी।
सौभाग्यक अभिमान विशाल,
होबऽ नहि दय छै वाचाल।
माह, कहल जे हम, से सब प्रत्यक्ष तोरा हयतऽ तत्काल।

(३४)

अलक - जाल संऽ अवरोधित छै जेकर कटाक्ष - विकास,
सुरा - त्याग संऽ भेल जेकर छै विस्मृत भृकुटि - विलास,
अंजन - स्नेह - शून्य जे लोचन,
मृगनयनी केर ऊपर - ऊपर
कड़कति निकट तोरा अयला पर
बूझै छी हम, प्राप्त करते ओ
मीनक हलचल संऽ चंचल कुवलय - दल - शोभाभास।

(३५)

हयतै एखन घरि जेकरा मे चेन्ह नह क नहि हमर।
संभोग क उपरान्त जाहि पर समुचित छल फेरब कर!
चिर - परिचित मोती लड़ उड़ कस,
परित्याग जे कयल दैव – वश;
फड़कत जांघ प्रिया क सरस केरा क थम - सन उज्जर।

(३६)

ताहि काल मे जलद, हुए यदि ओ निद्रा - सुख - लीन,
एक पहर सहि जहहऽ गर्जन छोड़ि ततऽ आसीन।
ता कि पाबि क मधुर सपन,
कहुना हम प्रणयी क मिलन;
सहसा बाहु - लता - बन्धन,
हुए गाढ़ आलिंगित ग्रीवा सं नहि शून्य - विलीन।

(३७)

ओकरा जगा अपन जल - सीकर – शीतल सरस पवन संऽ,
विकसित भेलि मालती - माला - सुमन - समान सुमन संऽ।
तोरे द्वारा शोभित खिड़की देखति अचल नयन संऽ,
ओहि मानिनो प्रति गंभीर
बिजली छिपा मर्म मे वीर,
बाजब केर उपक्रम करिहऽ गर्जन रुप वचन संऽ।

(३८)

"हे जीवत्पति के, तो जानऽ प्रिय हमरा जलधर कें।
निज स्वामी क भितर, जे आयल
तोहर निकट सन्देश ओकर लऽ राखि अपन अन्तर मे।
जे पथ मे विश्राम करैत,
वेणी खोलऽ लेल अपन
प्रियतमा केर उत्सुकता लैत,
अगुताबय परदेसी सबके मन्द - स्निग्ध निज स्वर मे

(३९)

एहि कथन पर पवनतनय-प्रति उन्मुख जनक - सुता - सन
उत्कण्ठा - उछवासित हृदय संऽ तोरा कऽ अवलोकन;
आओर एहिना संभावन कऽ
आगां सुनतऽ सावधान भऽ,
नारी लै सुहृदयक पहुँचाओल
पतिक कुशल किछुए कम होइछै संगम संऽ हे सज्जन।

(४०)

हमर वचन संऽ आ उपकार क सहज दृष्टि संऽ अप्पन,
ओकरा एहि प्रकारे कहि हऽतो हे चिरजीवी घन।
"सहचर जीवित तोहर उदासी,
अबले! कुशल तोहर पूछय छऽ
दूर रामगिरि–आश्रम-वासी,
विपदाच्छन्न व्यक्ति लै होई छै येह पूर्व संभाषण।"

(४१)

"दूर पड़ल जे, मार्ग जेकर विपरीत दैव अछि रोकल,
अपन अंग संऽ तोहर अंगक
कृशता सं कृशता क, ताप सं
ताप क, नयन-नोर सं नोरक;
उष्णोच्छवासे संऽ उच्छवासक;
अपन मिलन - उत्कण्ठे तोहर
मिलनोत्कण्ठा केर कल्पना ओ करैत छऽ केवल।"

(४२)

"मुँह सँऽ कहवा जोग बाजि कऽ बातो सखो – समक्ष
आनन - स्पर्श – लोभ संऽ काने कहवा लै जे दक्ष,
श्रवण - विषय के अतिक्रमण कऽ
आ अदृश्य भऽ कऽ लोचन संऽ
उत्कण्ठा - पूर्वक विरचित ई
सन्देश क पद हमरा मुख संऽ,
तोरा सुनबऽलै बाजल जे तोहर प्रियतम यक्ष।"

(४३)

"अंग प्रियगु-लता में, मोरक शिखा-भार मे केश,
दृष्टिपात चंचल मृगदृग में, शशि मे श्रीमुख - देश;
लघु – लघु नदो वीचि मेभास,
देखय छी हम भृकुटि-विलास,
हन्त! चण्डि! सादृश्य तोहर ने एकहि स्थान विशेष!

(४४)

'धातु – रंग संऽ प्रणय - कुपित लिखि तोहर चित्र शिला पर
अपना के जंऽ पतित करऽ पद पर चाहय छी तोहर
बारम्बार अश्रु सं उमड़ल,
दृष्टि हमर जायत अछि ढांकल;
हमरदुनुक संगम छविओ मे सहय दैव ने दुस्तर।"

(४५)

"पाबि स्वप्न - दर्शन मे तोहर कोनो तरहे वेश,
गगन – प्रसारित भुजा करऽ लै गाढ़ तोहर आश्लेष;
देखि दैव प्रायः स्थानीय
ई नहि जे, ढारथि नहि होथि
तरु – पल्लव पर मोट-मोट मोती सन दृग – जल - लेश।"

(४६)

"देवदार - द्रुम - पल्लव - पुट के सहसा खोलि सुधीर,
निकसल ओकर दूधक रस संऽ,
सुरभित दक्षिण दिशँ बहय छै जे हिमवान–समीर,
हे गुणवन्ती, ओकरा तेखन,
हम कऽ लऽ छियै क आलिंगन;
ई विचारि, जे पहिनै छूने हो की तोहर शरीर।"

(४७)

"पैघ पहर रजनी क निमिष सम कोना कयल लघु जाय?
दिवसो केर अवस्था सबटा
मन्द - मन्द सन्ताप - वला हो, तेकर कोन उपाय?
एहि प्रकारे कठिन कल्पने
हमर चित्त हे चंचल नयने?
तोहर वियोग - व्यथा ज्वाला संऽ तीव्र भेल असहाय।"

(४८)

"अतिशय पड़ल सोच मे सरिपहुँ हम दय छी अवलम्बन,
अपना कऽ अपनहि संऽ तोहू त नितान्त कातर - मन;
जुनि भऽ जाहे, हे कल्याणी,
केकरा होइत छै अविरल सुख?
केवल दुःख सहय के प्राणी?
नीचा सं ऊपर जाइत छै चक्र-जकां गति प्रतिक्षण।"

(४९)

"हरिक भुजग शयने तजले अछि शापक हमर विनाश।
आँखि मुनि कऽ बिता लिहऽ तो शेष चारि टा मास।
निर्मल चन्द्र - किरण सं स्नात,
शरत-यामिनी मे पश्चात,
विरह – काल मे गुनल सकल हम दूनू जन पूरब अभिलाष।

(५०)

"पुनः कहल जे पहिने कखनौ तो शय्या पर सूतलि,
कण्ठ - लगलि, नोने मे काननि, ऊँच स्वरें, किछु जागलि;
बार - बार हमरा पुछला संऽ
बजली मोने मोन बिहंसि कऽ
'धूर्त! स्वप्न मे रमण करति हम तोरा आन संग देखलि।"

Scanned by CamScanner

(५१)

" हे काजल - नयनी, देला संऽ एतबे हमर चिन्हानि
जनपवादें अविश्वास जुनि करिहऽ कुशली जानि।
लोग कहय बरु, स्नेह असारे
विरह - काल मे एक प्रकारे।
मुदा, अभोगे रस संचित भऽ, होइछै प्रेमक खानि।

(५२)

एना सखी के प्रथम वियोगक दुंख मे दऽ आश्वासन,
नंदी - खोपल शिखर - शैल संऽ कऽ दुत प्रत्यावर्तन;
अभि ज्ञान आ कुशल - सहित;
आनि समाद प्रिया - प्रेषित;
विकिसित भऽ कऽ फेर भार मे
मुरछल कुन्द-समान करविहऽ हमरो जीवन धारण।

(५३)

प्रिया उदेसें कार्य हमर ई करब कयल की निश्चय?
मानय छी हम मौन तोहर नहि अस्वीकार क परिचय।
मंगला पर निःशब्दों रहि कऽ
चातक के जल बरसा दय छऽ।
प्रणयी प्रति अनुकुल किये संऽ उत्तर देछ सदाशय।

(५४)

उचित प्रार्थना नहि रहितो, तो हमरा विरही जानि,
स्नेह-कारणे, वा हमरा प्रति दया करब, अनुमानि;
ई प्रिय काज हमर मोन क कऽ
पावस-श्री संतों शोभित भऽ
विचर इष्ट देश, नयि निमिषो तड़ित - वियोगक ग्लानि।

●

प्रणाम

कालिदास-कृत मेघदूत भऽ गेल शेष एहि ठाम।
हमर लेखनी आब करऽ चाहैत अछि विश्राम।

प्रथम मास अषाढ़क आयल,
पुनि नभ मे नव घन बगरायल;
विरही जनक मोन अकुआयल।
लोचन मे जल, अन्तर घायल।
गरजि-गरजि सन्देश कतेक ने बाजि गेल घनश्याम।
तरुणे वयसक पूर्ण भेल संकल्प आइ अभिराम।

एतवा दिन धरि बिसरल रहलहुँ।
कवि गुरु केर कल्पना धारा मे।
अद्भुत रसमय हम बहलहुँ।
कखनौ भूतल, कखनौ अम्बर,
कखनौ अन्तरिक्ष आडम्बर;
माया लोकक विस्मय - नगरी,
कंचन - धूर - भरल - गो - डगरी;
कल्पवृक्ष - मण्डप, मणि - दीपक,
सदा - वसन्त, मदन उद्दीपक;
इन्द्रधनुष - शोभा सतरंगी,
नव यौवन, विलास बहुरंगी।
मेघदूत संगे हम देखल पुण्य भूमि शिव-धाम।

महिमा देखल विशद स्वदेशक,
अपन संस्कृति, भाषा, भेषक।

रस - गंगा मे डूबि नहयलहुँ।
शाश्वत धन, नव जीवन पयलहुँ।
देखल भारत केर सनातन धर्म, अर्थ आ काम।

तीस वर्ष पूर्वक जे लाधल,
सुर से आइ पूर्णता साधल।
प्रभु कें धन्यवाद अछि शत - शत।
जनिक कृपा सँ पाबि रहल छी
साहित्यिक प्रसाद हम अक्षत।
दर्शन सँ कृतार्थ भऽ गेलहुँ।
मेघदूत काव्यक व्याजें हम।
अपन विस्तृत गौरव चिन्हलहुँ।
अमर भारती केर अमर कवि कें अछि हमर प्रणाम।





मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा

ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥


॥ विज्ञापन ॥


मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपे उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाईटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथझा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्ध में जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।